महार्घ्य

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

स्वर
पंडित सुनीलजी शास्त्री
सुश्री श्वेतल जैन, राजकोट

(छन्द-ताटंक)

निज भावों का महाअर्घ्य ले पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
जिनवाणी जिनधर्म शरण पा देव शास्त्र गुरु उर लाऊँ।।
तीस चौबीसी बीस जिनेश्वर कृत्रिम अकृत्रिम गृह ध्याऊँ।
सर्व सिद्धप्रभु पंचमेरु नन्दीश्वर गणधर गुण गाऊँ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सोलहकारण रत्नत्रय दशलक्षण नव सुदेव पाऊँ।
चौबीसों जिन भूत भविष्यत वर्तमान जिनवर ध्याऊँ।।
तीन लोक के सर्व बिम्ब जिन वन्दूँ जिनवर गुण गाऊँ।
अविनाशी अनर्घ्य पद पाऊँ शुद्ध आत्मगुण प्रगटाऊँ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(दोहा)

महा अर्घ्य अपर्ण करूँ पूर्ण विनय से देव।
आप कृपा से प्राप्त हो परम शान्ति स्वयमेव।।

ॐ ह्रीं श्री समस्त–जिनधर्म–पूज्यपदेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

शान्ति पाठ

स्वर
पंडित सुनीलजी शास्त्री
सुश्री श्वेतल जैन, राजकोट

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(दोहा)

परम शान्ति पाऊँ प्रभो, पाऊँ सम्यक् धर्म।
रत्नत्रय की भक्ति से, नाशूँ सारे कर्म।।
सकल जगत में शान्ति हो, सुखी रहें सब जीव।
षट्कायिक के जीव सब, दुखी न होय कदीव।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जीव मात्र पर क्षमा रख, पालूँ अपना धर्म।
शुद्धात्मा का ध्यान धर, पाऊँ निश्चय धर्म।।
यही भावना है प्रभो, घर-घर मंगल चार।
पूर्ण शान्ति हो विश्व में, हो सबका उद्धार।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(पंचपरमेष्ठी का स्मरण करते हुए नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

णमोकार महामंत्र

णमो अरहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आइरियाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सव्व साहूणं

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

क्षमापना

स्वर

पंडित सुनीलजी शास्त्री

सुश्री श्वेतल जैन, राजकोट

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

मैं लौटकर निगोद कभी जाऊँगा नहीं।
सम्यक्त्व धन जो पाया है गँवाऊँगा नहीं।।
मेहनत से मैंने भेदज्ञान पा ही लिया है।
मिथ्यात्व मोहभाव कभी लाऊँगा नहीं।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

स्वर्गों के सुख का मार्ग तो पाया अनंत बार।
स्वर्गों की क्षणिक साता में लुभाऊँगा नहीं।।
संसार–मार्ग छोड़ मोक्षमार्ग पाया है।
निज मोक्षमार्ग तज के कहीं जाऊँगा नहीं।।
गाए हैं मैंने गीत सदा ही विभाव के।
अब से विभाव गीत कभी गाऊँगा नहीं।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

मंगलमय भगवान वीर प्रभु मंगलमय गौतम गणधर।
मंगलमय श्री कुन्दकुन्द ऋषि मंगल जैनधर्म सुखकर।।
सर्व मंगलों में मंगल है श्रेष्ठ सर्व कल्याणमयी।
श्री जिनधर्म प्रधान जगत में जिनशासन हो सर्वजयी।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु